डॉ० चन्दा कुमारी [redacted]
गेस्ट टीचर
हिन्दी विभाग
रोहतास महिला महाविद्यालय
सासाराम

B.A Part III
पेपर - V
1/5/2020

उपन्यास

'उपन्यास' शब्द भारतीय काव्यशास्त्र में प्राचीन काल से प्रचलित रहा है किन्तु साहित्य की एक विधाविशेष के रूप में इसकी प्रतिष्ठा आधुनिक युग की देन है। 'अमरकोश' के अनुसार उपन्यास का अभिप्राय ऐसी रचना से है जो चित्त को प्रसन्नता प्रदान करती है। "उपन्यासः प्रसादनम्।" 'नाट्यशास्त्र' में इसका प्रयोग किया गया है तथा इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है। 'उपन्यास' का शाब्दिक अर्थ भी कुछ इसी प्रकार का है - 'समीप रखा हुआ' यहाँ वस्तु अथवा वृत्तांत पाठक को अपने बिल्कुल समीप रखा हुआ।

उपन्यास शब्द में ही इस विधा की मूल प्रकृति भलीभाँति संकेतित है। हिन्दी के उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द का कथन है - "मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र-मात्र ही समझता हूँ। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना तथा उसके रहस्यों को खोलना इसका मूल तत्व है।"

उपन्यास की सफलता इस बात में होती है कि उक्त क्रिया व्यापारों, चरित्रों तथा इनके द्वारा संचित कथानक के माध्यम से प्रस्तुत जीवन चित्र पाठकों को अपने इर्द-गिर्द फैले हुए वास्तविक जीवन का ही एक अंश मालूम पड़ता है। इसी कारण अन्य साहित्यिक विधाओं की तुलना में उपन्यास द्वारा प्रस्तुत जीवन सत्य और संदेश पाठक अनायास ही अंगीकार कर लेता है। उसे आभास भी नहीं होता कि उसे कोई संदेश दिया जा रहा है किन्तु घटनाओं तथा चरित्रों से होते हुए अपने आप संदेश उसके हृदय पटल तक पहुंच जाते हैं।

Scanned with CamScanner

1/5/20 ②

उपन्यास मानव जीवन का दर्पण है। इसके माध्यम से कथाकार जीवन की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करता है। इसकी रचना विशाल पृष्ठभूमि पर होती है।

<u>उपन्यास के प्रमुख तत्व निम्नलिखित है।</u>

1. कथानक 2. पात्र और चरित्र-चित्रण 3. कथोपकथन अथवा संवाद-योजना 4. देश काल, वातावरण 5. भाषा-शैली 6. उद्देश्य।

1. <u>कथानक</u> —: कथानक उपन्यास का सर्वप्रमुख तत्व या कथावस्तु है। कथानक के संगठन में रचनाकार की दृष्टि और प्रकृति का योग होता है। रचनाकार यथार्थवादी दृष्टि रखता है अथवा आदर्शवादी अथवा आदर्श की ओर उन्मुख यथार्थवादी दृष्टि, इसका प्रभाव कथानक पर पड़ता है। यथार्थवादी दृष्टि वस्तुओं घटनाओं के स्वरूप और क्रम के यथातथ्य चित्रण पर बल देती है। प्रेमचन्द जैसे अनेक रचनाकार वस्तुओं का चित्रण सर्वथा यथार्थ रूप में प्रस्तुत करते हैं किन्तु इसके साथ ही अन्त में कथानक को इस तरह मोड़ देते हैं कि वह एक आदर्श की प्रस्तुति करता है। उपन्यासकार किसी भी प्रत्येक स्थिति में संकलन दृष्टि अपनाएँ किन्तु उसे निम्नलिखित बातों का कथानक के संगठन में ध्यान रखना होता है।

(i) कथानक का सुसंगठन (ii) जिज्ञासा पूर्णता (iii) संभाव्यता और विश्वसनीयता (iv) घटनाओं का कार्य-कारण श्रृंखला में आबद्ध होना (v) आवृत्ति एवं संगति तथा सम्बद्धता (vi) घटनाओं की स्वाभाविकता (vii) कथानक की सम्पूर्णता (viii) अभीष्ट प्रभावोत्पादकता।

2. पात्र और चरित्र चित्रण — वास्तव में जब भी घटना की बात की जाती है तो घटना के मूल में कोई न कोई पात्र विद्यमान होता है।

Scanned with CamScanner

हेनरी जेम्स ने कहा है– "चरित्र क्या है घटनाओं के निर्धारण के सिवाय और चरित्र के विकास के सिवाय घटना और कुछ नहीं है।" 3

उपन्यास में प्रायः दो प्रकार के चरित्र पाये जाते हैं– (1) मुख्य चरित्र (ii) सहायक चरित्र। प्रायः इन जिन्हें नायक-नायिका कहते हैं, वे उपन्यास के मुख्य पात्र होते हैं दूसरे चरित्र सहायक चरित्र कहलाते हैं। सहायक चरित्र भी रोचकता रखते हैं किन्तु उनकी योजना मुख्य चरित्र के विकास में सहायता की दृष्टि से की जाती है।

प्रेमचन्द बड़े कलाकार इसलिए हैं कि उन्होंने चरित्र चित्रण में बहुधा का परिचय दिया है। उन्होंने कहीं उपेक्षा की है। इसी तरह जमींदारों या पूंजीपतियों की अच्छाइयों की भी अनदेखी इन्होंने नहीं की है। चरित्र-चित्रण सम्बन्धी यह व्यापक दृष्टि है उपन्यासकार को व्यापक मान्यता प्रदान करती है। उपन्यास में चरित्र चित्रण स्वाभाविक, यथार्थ न्यायपूर्ण, जीवन्त प्रभावपूर्ण तथा बाह्य और आन्तरिक पक्षों के सामंजस्य से युक्त होना चाहिए

3. कथोपकथन :– उपन्यास में इसका अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। कथोपकथन द्वारा पात्रों की प्रतिक्रियायें, उनके विचार तथा दूसरों के प्रति उनके भाव आदि प्रकट होते हैं। इससे चरित्र चित्रण में प्रत्यक्षतः सहायता प्राप्त होती है। उपन्यास में कथोपकथन के अनेक रूप होता है। इसके पात्र का एकान्त आलाप उद्गार, उद्गार आदि कह सकते हैं। एक पात्र द्वारा दूसरे पात्रों के विषय में व्यक्त भाव या विचार कथोपकथन का ही रूप है। संतुलित एवं स्वाभाविक कथोपकथन उपन्यास की रचना में महत्वपूर्ण योगदान है।

Scanned with CamScanner

4. देशकाल :— देशकाल, वातावरण उपन्यास का (4)
सबसे प्रमुख तत्व होता है, क्योंकि उपन्यास के सब
सभी तत्व प्रभावित होते हैं देशकाल, वातावरण से
अभिप्राय यह है कि उपन्यास घटना जिस स्थान
समय और वातावरण की हो उसके अनुकूल सूक्ष्म
एवं सटीक चित्रण से ही घटना विश्वसनीय
बनती है। प्रेमचन्द तथा तथा दूसरे बड़े
उपन्यासकारों की विशिष्टता यही है कि जिस
जीवन का वे चित्रण करते हैं, उसकी शैली से
शैली विशेषता को भी नायक अन्याय नहीं करते।
वातावरण का चित्रण पात्रों के संवादों के माध्यम
से भी किया जा सकता है तथा आवश्यकता
अनुसार लेखक के माध्यम से भी वातावरण की
सूक्ष्म विशिष्टताओं को वर्णित कर सकता है

5. भाषा शैली :— भाषा किसी भी साहित्यिक
रचना का प्रमुख तत्व है। अतः इसकी भाषा मूल
रूप में जनजीवन के सबसे निकट होनी चाहिए।
उपन्यासकार को इन सबके अनुरूप अनेक प्रकार के भाषिक
स्तरों से गुजरना पड़ता है। शैली भी उपन्यास का
प्रमुख तत्व है। उपन्यास की अनेक शैलियाँ देखने
में आती हैं जिनमें (i) वर्णनात्मक या कथात्मक
शैली (ii) पत्रात्मक शैली (iii) आत्मकथात्मक
शैली (iv) संवादात्मक शैली (v) डायरी शैली
छी — शैली तथा (viii)
(vi) चेतना - प्रवाह
ऐतिहासिक शैली प्रमुख है।

इस प्रकार किसी एक या आवश्यकतानुसार विभिन्न शैलियों का प्रयोग करते हुए उपन्यासकार अपनी अपनी रचना पर बल देता है। पर जिस को अपनाये, यह आवश्यक है कि दूसरी शैलियों उसकी वर्णित शैली पर उसके व्यक्तित्व की छाप दिखाई पड़नी चाहिए। शैली का कौशल कथा की प्रभाविकता का प्रमुख आधार होता है।

6. उद्देश्य :— उपन्यास एक सोद्देश्य रचना है। और प्रभावशाली रचनाकार भी किसी न किसी ध्येय से प्रेरित होकर रचना करता है। उपन्यासकार उद्देश्य उसी में अन्तर्निहित होता है तथा कथानक का उद्देश्य ~~चाहिए~~ चाहिए, संवाद तथा वातावरण सजीव बनाते हुए पाठक तक अनायास पहुँचता है। इसी पर उपन्यास की सफलता निर्भर करती है।